Sign in to edit and save changes to this file.

डॉ. नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर जारी की एडवाइजरी

काशिफ आजाद

कानपुर(विशाल प्रदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ0 नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है उन्होंने बताया कि भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हैक्टर है एवं उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है भारत में अलसी की खेती मुख्य रूप से 95इ मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार हैक्टर एवं उत्पादन 19 हजार टन होता है उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर, कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है बुंदेलखंड क्षेत्र में बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है कहीं-कहीं पर किसान भाई धान की कटाई के उपरांत अलसी की छिटकवां खेती करते हैं। अलसी के बीज में तेल 35 से 45 इ, कार्बोहाइड्रेट 29इ, प्रोटीन 21इ, खनिज 3इ, ऊर्जा 530 कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है पंक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं इसमें ओमेगा-3 एवं ओमेगा-6 वसा अम्ल ही होते हैं ओमेगा 3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है जिससे हृदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है हो ने बताया हनी सिंह की प्रजातियां इंदू, उमा, शेखर, अपर्णा, शील इत्यादि हैं कुल तेल उत्पादन का 80इ भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट, साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है डॉ0 तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उदेशी होती हैं जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल एवं रेशा निकलता है रेशा से कपड़ा एवं सदस्य बनाई जाती जिससे किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

हिन्दी दैनिक

उ०प्र०, उत्तरांचल, बिहार एवं दिल्ली में प्रसारित

राष्ट्रीय अवतार

लखनऊ, कुशीनगर, सन्तकबीरनगर एवं फिरोजाबाद से प्रकाशित

भारत सरकार एवं उ0प्र0 सरकार से मान्यता प्राप्त

: 18 अंक : 53 हिन्दी दैनिक, पडरौना (कुशीनगर) शनिवार, 09 अक्टूबर 2021 R.N.I.No. UPHIN/2004/16012 पृष्ठ : 4 मूल्य : दो रूपये

ओमेगा-3 से परिपूर्ण अलसी : डॉ.नलिनी तिवारी

राष्ट्रीय अवतार न्यूज़

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी आर सिंह के निर्देश के क्रम में आज तिलहन अनुभाग

की अलसी अभिजनक डॉ नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि भारत में अलसी का क्षेत्रफल १.८ लाख हैक्टर है। एवं उत्पादकता ६७१ किलो प्रति हेक्टेयर है। भारत में अलसी की खेती मुख्य रूप से ९५त्न मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र,बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल २७ हजार हैक्टर एवं उत्पादन १९ हजार टन होता है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर, कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है। कहीं-कहीं पर किसान भाई धान की कटाई के उपरांत अलसी की छिटकवां खेती करते हैं। अलसी के बीज में तेल ३५ से ४५ त्न, कार्बोहाइड्रेट २९त्न, प्रोटीन २१त्न, खनिज ३त्न, ऊर्जा ५३० कैलोरी, कैल्शियम १७० मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम, लोह्य ३७० मिलीग्राम प्रति १०० ग्राम पाया जाता है। पंक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं इसमें ओमेगा-३ एवं ओमेगा-६ वसा अम्ल ही होते हैं। ओमेगा ३ कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। जिससे ह्रदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है। हो ने बताया हनी सिंह की प्रजातियां इंदू, उमा,शेखर, अपर्णा, शील इत्यादि हैं। कुल तेल उत्पादन का ८०त्न भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट,साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उदेशी होती हैं जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल एवं रेशा निकलता है। रेशा से कपड़ा एवं सदस्य बनाई जाती जिससे किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अमर उजाला
शनिवार • 09.10.2021
kanpur.amarujala.com

निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को किया पुरस्कृत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में गुरुवार को फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड की ओर से आयोजित निबंध प्रतियोगिता 'स्वदेशी से स्वावलंबी इंडिया @75' के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. आरपी सिंह ने बताया कि इस प्रतियोगिता में 90 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया था। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने प्रथम स्थान पाने वाले पुष्पेंद्र, विष्णु सोनी, ऊषा और आशीष कुमार सिंह को प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो और 1100 रुपये की प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया। द्वितीय स्थान पाने वाली स्वीकृति, अंजली वर्मा, अंकिता सिंह को प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो, छह सौ रुपये और तृतीय स्थान पाने वाली जेनब अली, हर्षिता राय और आयुष मिश्रा को प्रशस्ति पत्र और मोमेंटो दिया गया। पूर्व में आयोजित कुरियन स्टोरी प्रतियोगिता में सफल छात्र प्रियांशु सिंह को मोबाइल और प्रशस्ति पत्र दिया गया। यहां पर कानपुर फर्टिलाइजर एंड केमिकल लिमिटेड के वरिष्ठ संयुक्त अध्यक्ष मेजर जनरल विनोद कुमार, मनीष शुक्ला और आरआर कुमार आदि मौजूद रहे। (संवाद)

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:272 | देहरादून, शुक्रवार, 08 अक्टूबर, 2021 | पृष्ठ:08

डॉ. नलिनी ने अलसी की खेती को लेकर जारी की एडवाइजरी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ० नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हैक्टर है एवं उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है भारत में अलसी की खेती मुख्य रूप से 95% मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार हैक्टर एवं उत्पादन 19 हजार टन होता है उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती

जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर, कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है बुंदेलखंड क्षेत्र में बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है कहीं–कहीं पर किसान भाई धान की कटाई के उपरांत अलसी की छिटकवां खेती करते हैं। अलसी के बीज में तेल 35 से 45%, कार्बोहाइड्रेट 29%, प्रोटीन 21%, खनिज 3%, ऊर्जा 530 कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है पंक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं इसमें ओमेगा–3 एवं ओमेगा–6 वसा अम्ल ही होते हैं ओमेगा 3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है जिससे ह्रदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है हो ने बताया हनी सिंह की प्रजातियां इंदू, उमा, शेखर, अपर्णा, शील इत्यादि हैं कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट, साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है डॉ० तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उदेशी होती हैं जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल एवं रेशा निकलता है रेशा से कपड़ा एवं सदस्य बनाई जाती जिससे किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हृदयाघात व गठिया से छुटकारा दिलाता है ओमेगा-3

कानपुर, 8 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से आज तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हेक्टेयर है एवं उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है। अलसी में पाये जाने वाला ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने के साथ ही हृदयाघात और गठिया से छुटकारा दिलाता है। देश में अलसी की खेती मुख्य रूप से 95 प्रतिशत मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र,बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार हेक्टेयर एवं उत्पादन 19 हजार टन होता है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर ,बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर,कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है। कहीं-कहीं पर किसान भाई धान की कटाई के उपरांत अलसी की छिटकवां खेती करते हैं। अलसी के बीज में तेल 35 से 45 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट 29 प्रतिशत, प्रोटीन 21 प्रतिशत, खनिज 3 प्रतिशत, ऊर्जा 530 कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है। पंक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं इसमें ओमेगा-3 एवं ओमेगा-6 वसा अम्ल ही होते हैं। ओमेगा 3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। जिससे हृदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है। उन्होंने बताया हनी सिंह की प्रजातियां इंदू, उमा,शेखर, अपर्णा, शील इत्यादि हैं। कुल तेल उत्पादन का 80त्न भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट,साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उदेशी होती हैं जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल एवं रेशा निकलता है। रेशा से कपड़ा एवं सदस्य बनाई जाती जिससे किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ नलिनी तिवारी

ओमेगा-3 से परिपूर्ण अलसी- कृषि वैज्ञानिक

Sign in to edit and save changes to this file.

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

शुक्रवार, 08-10-2021 अंक-370

www.worldkhabarexpress.media

www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

WORLD खबर EXPRESS WORLD खबर एक्सप्रेस

कानपुर

सीएसए के तिलहन अनुभाग की वैज्ञानिक ने दिए टिप्स

ओमेगा-3 से परिपूर्ण है अलसीः डॉ. नलिनी तिवारी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ. नलिनी तिवारी ने अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हैक्टर है। उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है। भारत में अलसी की खेती मुख्य रूप से 95 फीसदी मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है। उत्तरप्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार हेक्टेयर व उत्पादन 19 हजार टन होता है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर, कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है। कहीं-कहीं किसान धान की कटाई के बाद अलसी की छिटकवां खेती करते हैं।

उन्होंने बताया कि अलसी के बीज में तेल 35 से 45 फीसदी, कार्बोहाइड्रेट 29, प्रोटीन 21, खनिज 3 फीसदी, ऊर्जा 530 कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है। पॉक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं। इसमें ओमेगा-3 व ओमेगा-6 वसा अम्ल ही होते हैं। ओमेगा-3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है जिससे हृदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है। हनी सिंह की प्रजातियां इंदु, उमा, शेखर, अपर्णा, शील आदि हैं। कुल तेल उत्पादन का 80 फीसदी भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट, साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है। डॉ. तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उदेशी होती हैं, जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल व रेशा निकलता है। रेशा से कपड़ा व सदस्य बनाई जाती जिससे किसान अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Sign in to edit and save changes to this file.

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

जन एक्सप्रेस

तृतीय स्वरूप मां चंद्रघंटा

लखनऊ, शनिवार, 09 अक्टूबर, 2021, वर्ष : 12, अंक : 351, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/- www.janexpresslive.com/epaper @janexpresslive लखनऊ तथा देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

किसानों के लिए अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर.सिंह के निर्देश क्रम में शुक्रवार को तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ. नलिनी तिवारी ने किसानों के लिए अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी

का महत्वपूर्ण स्थान है भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हैक्टर और उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है वही उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार हैक्टर और उत्पादन 19 हजार टन होता है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर, बांदा, चित्रकूट, कानपुर नगर, कानपुर देहात, गोरखपुर, बाराबंकी आदि जनपदों में होती है। डॉ. तिवारी ने बताया कि अलसी के बीज में 35 से 40 फीसदी तेल, 29 फीसदी कार्बोहाइड्रेट, 21फीसदी प्रोटीन, 3 फीसदी खनिज, 503 कैलोरी ऊर्जा,कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता हैइसमें ओमेगा-3 एवं ओमेगा-6 वसा अम्ल पाए जाते हैं जिसमे ओमेगा 3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। जो हृदयाघात और गठिया से छुटकारा पाने में सहायक है।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
वर्ष : 6, अंक : 182 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शनिवार
09 अक्टूबर, 2021
मूल्य ₹ 3.00
तृतीय चन्द्रघंटा
वन्दे वाञ्छित लाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्। वृषारूढा शूलधरां यशस्विनीम्॥

ओमेगा-3 से परिपूर्ण अलसीः डॉक्टर नलिनी तिवारी

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी आर सिंह के निर्देश के क्रम में आज तिलहन अनुभाग की अलसी अभिजनक डॉ नलिनी तिवारी ने किसानों हेतु अलसी की खेती पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि तिलहनी फसलों में अलसी का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने बताया कि भारत में अलसी का क्षेत्रफल 1.8 लाख हैक्टर है। एवं उत्पादकता 671 किलो प्रति हेक्टेयर है। भारत में अलसी की खेती मुख्य रूप से 95% मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र,बिहार, झारखंड, नागालैंड और असम में होती है। उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल 27 हजार

हैक्टर एवं उत्पादन 19 हजार टन होता है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती जालौन, हमीरपुर, झांसी, ललितपुर,बांदा,चित्रकूट,कानपुर नगर , कानपुर देहात,गोरखपुर,बाराबंकी आदि जनपदों में होती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में बुंदेलखंड क्षेत्र में बुवाई का उचित समय अक्टूबर का प्रथम पखवाड़ा एवं मैदानी क्षेत्रों में द्वितीय पखवाड़े तक होती है। कहीं-कहीं पर किसान भाई धान की कटाई के उपरांत अलसी की छिटकवां खेती करते हैं। अलसी के बीज में तेल 35 से 45 %, कार्बोहाइड्रेट 29%, प्रोटीन 21%, खनिज 3%, ऊर्जा 530 कैलोरी, कैल्शियम 170 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम, लोहा 370 मिलीग्राम प्रति 100 ग्राम पाया जाता है। पंक्ति में सभी अमीनो एसिड पाए जाते हैं इसमें ओमेगा-3 एवं ओमेगा-6 वसा अम्ल ही होते हैं। ओमेगा 3 कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। जिससे हृदयाघात और गठिया से छुटकारा मिलता है। डो ने बताया इनी सिंह की प्रजातियां इंदु, उमा,शेखर, अपर्णा, शील इत्यादि हैं। कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट,साबुन, वार्निश, छपाई आदि में प्रयोग की जाती है। डॉक्टर तिवारी ने बताया कि कुछ प्रजातियां भी उद्देशी होती है जैसे शिखा, रश्मि, पार्वती, गौरव जिनसे तेल एवं रेशा निकलता है। रेशा से कपड़ा एवं सदस्य बनाई जाती जिससे किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।